# Chapter 9 सिकतासेतुः

#### 2marks

#### प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत

- (क) कः बाल्ये विद्यां न अधीतवान?
- (ख) तपोदत्तः कया विद्याम् अवाप्तुं प्रवृत्तः अस्ति?
- (ग) मकरालये कः शिलाभिः सेतुं बबन्धं?
- (घ) मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां कुत्र उपैति?
- (ङ) पुरुषः सिकताभिः किं करोति?

उत्तराणि:

- (क) तपोदत्तः।
- (ख) तपश्चर्या
- (ग) रामः।
- (घ) गृहम्
- (ङ) सेतुनिर्माणम्।

#### प्रश्न 2.

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत (अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

(क) अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत्?

(अध्ययन न किया हुआ तपोदत्त किनके द्वारा निन्दित हुआ?)

उत्तरम् :

अनधीतः तपोदत्तः कुटुम्बिभिः मित्रैश्च गर्हितोऽभवत्।

(अध्ययन न किया हुँ आ तपोदत्त परिवारजनों और मित्रों द्वारा निन्दित हुआ।)

(ख) तपोदत्तः केन प्रकारेण विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्? (तपोदत्त किस तरह से विद्या प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त हुआ?) उत्तरम् :

तपोदत्तः तपोभिरेव विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्। (तपोदत्त तपस्या के द्वारा विद्या प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त हुआ।)

(ग) तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहस? (तपोदत्त पुरुष की किस चेष्टा को देखकर हँसा था?) उत्तरम् : तपोदत्तः पुरुषं सिकताभिः नद्यां सेतुनिर्माणप्रयासं कुर्वाणं दृष्ट्वा अहसत्। [तपोदत्त पुरुष को बालू (रेत) से नदी में पुल बनाने का प्रयास करता हुआ देखकर हँसा था।

(घ) तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः कीदृशः कथितः? (केवल तपस्या से विद्या प्राप्त करने का उसका प्रयास किस प्रकार का कहा गया है?) उत्तरम् : तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः सिकताभिः नद्यां सेतुनिर्माणप्रयासः कथितः। [केवल तपस्या के द्वारा विद्या प्राप्त करने के लिए उसका प्रयास बालू (रेत) से नदी में पुल बनाने का प्रयास कहा गया है।]

(ङ) अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय कुत्र गतः? (अन्त में तपोदत्त विद्या ग्रहण करने के लिए कहाँ गया?) उत्तरम् : अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय गुरुकुलं गतः। न्ति में तपोदत्त विद्या ग्रहण करने के लिए गुरुकुल में गया।)

प्रश्न 3. भिन्नवर्गीयं पदं चिनुत यथा-अधिरोढुम्, गन्तुम्, सेतुम्, निर्मातुम्। (क) निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य। उत्तरम् : चिन्तय।

(ख) विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलषामि। उत्तरम् : करिष्यामि।

(ग) तपोभिः, दुर्बुद्धिः, सिकताभिः, कुटुम्बिभिः। उत्तरम् : दुर्बुद्धिः।

प्रश्न 4.

- (क) रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?
- (i) अलमलं तव श्रमेण।

उत्तरम् : पुरुषाय।

(ii) न अहं सोपानमागैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि। उत्तरम् : पुरुषाय।

(iii) चिन्तितं भवता न वा? उत्तरम् : पुरुषाय।

(iv) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। उत्तरम् : तपोदत्ताय।

(v) भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्। उत्तर : तपोदत्ताय।

प्रश्न 5.

स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(कं) तपोदत्तः तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽसि।

उत्तरम् :

तपोदत्तः कया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽसि?

| (ख) तपोदत्तः कुटुम्बिभिः मित्रैः गर्हितः अभवत्।<br>उत्तरम् :                                   |
|--|
| कः कुटुम्बिभिः मित्र: गर्हितः अभवत्?   |
|  |
| (ग) पुरुषः नद्यां सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते।<br>उत्तरम् :                               |
| पुरुषः कुत्र सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते?   |
| (घ) तपोदत्तः अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति।<br>उत्तरम् :                          |
| तपोदत्तः कम् विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति?   |
| (ङ) तपोदत्तः विद्याध्ययनाय गुरुकुलम् अगच्छत्।<br>उत्तरम् :                                     |
| तपोदत्तः किमर्थं गुरुकुलं अगच्छत्?   |
| (च) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यास: करणीय:।<br>उत्तरम् :  |
| कुत्र गत्वैव विद्याभ्यासः करणीयः?  |
| प्रश्न 6.<br>उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि लिखत -<br>विग्रहपदानि - समस्तपदानि |
| यथा - संकल्पस्य सातत्येन - संकल्पसातत्येन<br>(क) अक्षराणां ज्ञानम्                             |
| (ख) सिकतायाः सेतुः   |
| (ग) पितुः चरणैः  |
| (घ) गुरोः गृहम्<br>(ङ) विद्यायाः अभ्यासः   |
| उत्तरम् :  |
| विग्रहपदानि - समस्तपदानि   |
| (क) अक्षराणां ज्ञानम् - अक्षरज्ञानम्   |
| (ख) सिकतायाः सेतुः - सिकतासेतुः  |
| (ग) पितुः चरणैः - पितृचरणैः  |

| (घ) गुरोः गृहम् - गुरुगृहम्   |
|---|
| (ङ) विद्यायाः अभ्यासः - विद्याभ्यासः  |
| (अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत -                 |
| समस्तपदानि - विग्रहः  |
| यथा - नयनयुगलम् - नयनयोः युगलम्   |
| (क) जलप्रवाहे   |
| (ख) तप्श्चर्यया   |
| (ग) जलोच्छलनध्वनिः  |
| (घ) सेतुनिर्माणप्रयासः  |
| उत्तरम् :   |
| समस्तपदानि - विग्रहः  |
| (क) जलप्रवाहे - जलस्य प्रवाहे   |
| (ख) तपश्चर्यया - तपसः चर्यया<br>(ग) जलोच्छलनध्वनिः - जलस्य उच्छलनस्य ध्वनिः |
| (घ) सेतुनिर्माणप्रयासः - सेतोः निर्माणस्य प्रयासः।                          |
| (प) ततुःगिनाणप्रवासः - सताः गिनाणस्य प्रवासः।                               |
| 되워 7.   |
| उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनं वाक्यद्वयं रचयत                    |
| (क) यथा- अलं चिन्तया। ('अलम्' योगे तृतीया)                                  |
| (i) (भय) (कोलाहल)   |
| उत्तरम् :   |
| (i) अलं भयेन।   |
| (ii) अलं कोलाहलेन।  |
| (ख) यथा - माम् अनु स गच्छति। ('अनु' योगे द्वितीया)                          |
| (i) (गृह)   |
| (ii) (पर्वत)  |
| उत्तरम् :   |
| (i) गृहम् अनु सः भ्रमति।  |
| (ii) पर्वतम् अनु सः गच्छति।   |
| (ग) यथा- अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलषसि। ('विना' योगे द्वितीया) |
| (i) (परिश्रम)   |
| (ii) (अभ्यास)   |
| (.,, (,   |

#### **SANSKRIT**

## उत्तरम् :

- (i) परिश्रमं विनैव धनं प्राप्तुमभिलषसि।
- (ii) अभ्यासं विनैव विद्यां प्राप्तुमभिलषसि।
- (घ) यथा-सन्ध्यां यावत् गृहमुपैति। ('यावत्' योगे द्वितीया)
- (i) ..... (मास)
- (ii) ..... (वर्ष)

उत्तरम् :

- (i) मासूं यावत् नगरम् उपैति।
- (ii) वर्षं यावत् विद्यालयम् उपैति।

#### 4marks

## लघूत्तरात्मक प्रश्न :

## (क) संस्कृत में प्रश्नोत्तर

#### प्रश्न 1.

तपोदत्तः बाल्ये कैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाधीतवान्?

(तपोदत्त ने बचपन में किनके द्वारा पीड़ित किये जाने पर भी विद्या प्राप्त नहीं की?)

उत्तर :

तपोदत्तः बाल्ये पितृचरणै: क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाधीतवान्।

(तपोदत्त ने बचपन में पिताजी के द्वारा पीड़ित किये जाने पर भी विद्या प्राप्त नहीं की।)

#### प्रश्न 2.

परिधानैरलङ्कारभूषितोऽपि कः न शोभते?

(वस्त्रों और आभूषणों से सुशोभित होने पर भी कौन शोभा नहीं पाता?)

#### उत्तर:

परिधानैरलङ्कारभूषितोऽपि विद्याहीनः न शोभते।

(वस्त्रों और आभूषणों से सुशोभित होने पर भी विद्या से हीन व्यक्ति शोभा नहीं पाता है।)

#### प्रश्न 3.

कीदृशः मार्गभ्रान्तः अपि वरम्?

(कैसा मार्ग से भटका हुआ भी ठीक है?)

#### उत्तर:

दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्।।

(दिन में मार्ग से भटका हुआ यदि सन्ध्या को घर आ जाता है तो भी वह ठीक है।)

#### प्रश्न 4.

जगति केषाम् अभावो नास्ति?

(संसार में किनका अभाव नहीं हैं?)

## उत्तर:

जगति मूर्खाणाम् अभावो नास्ति।

(संसार में मूों का अभाव नहीं है।)

#### प्रश्न 5.

रामः मकरालये कैः सेतुं बबन्ध?

(राम ने समुद्र में किनसे पुल बाँधा था?)

उत्तर:

रामः मकरालये शिलाभिः सेतुं बबन्ध।

(राम ने समुद्र में शिलाओं से पुल बाँधा था।)

#### प्रश्न 6.

परुषः काभिः सेतनिर्माणस्य प्रयासं करोति स्म? (पुरुष किनसे पुल बनाने का प्रयास कर रहा था?)

उत्तर :

पुरुषः सिकताभिः सेतुनिर्माणस्य प्रयासं करोति स्म। (पुरुष बालू (मिट्टी) से पुल बनाने का प्रयास कर रहा था।)

#### 以왕 7.

पुरुषः कथमधिरोढुं न विश्वसिति?

(पुरुष किस प्रकार ऊपर चढ़ने के लिए विश्वास नहीं करता था?)

उत्तर :

पुरुषः सोपानमार्गः अधिरोढुं न विश्वसिति।

(पुरुष सीढ़ियों के मार्ग से ऊपर चढ़ने में विश्वास नहीं करता था।)

#### प्रश्न 8.

भद्रपुरुषः कम् उद्दिश्य अधिक्षिपति?

(भद्रपुरुष किसे उद्देश्य में करके आक्षेप करता है?)

उत्तर:

भद्रपुरुषः तपोदत्तम् उद्दिश्य अधिक्षिपति।

(भद्र पुरुष तपोदत्त को उद्देश्य में करके आक्षेप करता है।)

### प्रश्न 9.

तपोदत्तः अक्षरज्ञानं विनैव किम् अवाप्तुमभिलषति?

(तपोदत्त अक्षर-ज्ञान के बिना ही क्या प्राप्त करना चाहता था?)

उत्तर :

तपोदत्तः अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुमभिलषति।

(तपोदत्त अक्षर-ज्ञान के बिना ही विद्वत्ता प्राप्त करना चाहता था।)

```
प्रश्न 10.
तपोदत्तः विद्याध्ययनाय कुत्र गच्छति?
(तपोदत्त विद्या अध्ययन के लिए कहाँ जाता है?)
उत्तर:
तपोदत्तः विद्याध्ययनाय गुरुकुलं गच्छति।
(तपोदत्त विद्या अध्ययन के लिए गुरुकुल में जाता है।)
प्रश्न 11.
तपोदत्त कस्मिन् कार्ये किमर्थञ्च रतः भवति?
(तपोदत्त किस कार्य में और किसलिए लीन होता है?)
उत्तर:
तपोदत्तः विद्यामवाप्तुं तपोरतः भवति।
(तपोदत्त विद्या प्राप्त करने के लिए तपस्या में लीन होता है।)
प्रश्न 12.
विद्याहीनः नरः सभायां कथमिव न शोभते?
(विद्याहीन मनुष्य सभा में किसके समान शोभा नहीं देता?)
उत्तर:
विद्याहीनः नरः सभायां निर्मणिभोगीव न शोभते।
(विद्याहीन मनुष्य सभा में मणिहीन सर्प के समान शोभा नहीं देता।)
प्रश्न 13.
तपोदत्तः कस्मात् कारणात् सर्वैः गर्हितोऽभवत?
(तपोदत्त किस कारण सभी से निन्दित हुआ?)
उत्तर:
तपोदत्तः अशिक्षित्वात् सर्वैः गर्हितोऽभवत्।
(तपोदत्त अशिक्षित होने के कारण सभी से निन्दित हुआ।)
प्रश्न 14.
कः भ्रान्तो न मन्यते?
(कौन भटका हुआ नहीं माना जाता है?)
उत्तर:
यः दिवसे भ्रान्तः सन्ध्यां यावद् गृहमुपैति सः भ्रान्तो न मन्यते।
(जो दिन में भटका हुआ सन्ध्या को घर आ जाता है वह भटका हुआ नहीं माना जाता है।)
```

#### प्रश्न 15.

तपोदत्तः कीदृशं पुरुषमेकं पश्यति?

(तपोदत्त किस प्रकार के एक पुरुष को देखता है?)

उत्तर:

तपोदत्तः सिकताभिः सेतुनिर्माणप्रयासं कुर्वाणं पुरुषमेकं पश्यति। (तपोदत्त बालू से पुल बनाने का प्रयास करते हुए एक पुरुष को देखता है।)

#### प्रश्न 16.

पुरुषः कुत्र सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते स्म?

(पुरुष कहाँ पर बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहा था?)

उत्तर :

पुरुषः तीव्रप्रवाहायां नद्यां सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते स्म।

(पुरुष तीव्र प्रवाह वाली नदी में बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहा था।)

#### प्रश्न 17.

केन सर्वं सिद्धं भवति?

(किससे सब कुछ सिद्ध होता है?)

उत्तर :

प्रयत्नेन सर्वं सिद्धं भवति।

(प्रयत से सब कुछ सिद्ध होता है।)

#### प्रश्न 18.

गुरुगृहं गत्वैव कः करणीयः?

(गुरुगृह में जाकर ही क्या करना चाहिए?)

उत्तर:

गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो करणीयः।

(गुरुगृह में जाकर ही विद्याभ्यास करना चाहिए।)

#### प्रश्न 19.

कैरेव लक्ष्यं प्राप्यते?

(किनसे लक्ष्य प्राप्त होता है?)

उत्तर :

पुरुषार्थरैव लक्ष्यं प्राप्यते।

(पुरुषार्थ से लक्ष्य प्राप्त होता है।)

#### **SANSKRIT**

प्रश्न 20. पुरुषेण कस्य नयनयुगलम् उन्मीलितम्? (पुरुष ने किसके दोनों नेत्रों को खोल दिया?) उत्तर : पुरुषेण तपोदत्तस्य नयनयुगलम् उन्मीलितम्। (पुरुष ने तपोदत्त के दोनों नेत्रों को खोल दिया।)

#### 7marks

1. आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम विणक्पुत्रः। स च विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत् यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ताः स्ववीर्यतः। तस्मिन विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः ॥ तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुला आसीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरम् आगत्य तं श्रेष्ठिनम् अवदत्-"भोः श्रेष्ठिन् ! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।" सोऽवदत्-"भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैः भिक्षता" इति।

जीर्णधनः अवदत्-"भोः श्रेष्ठिन् ! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैः भिक्षता। ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गिमष्यामि। तत् त्वम् आत्मीयं एनं शिशुं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति। स श्रेष्ठी स्वपुत्रम् अवदत्-"वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यित, तद् अनेन साकं गच्छ" इति। अथासौ श्रेष्ठिपुत्रः धनदेवः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स विणक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहत् शिलया आच्छाद्य सत्त्वरं गृहमागतः।

अन्वय-यत्र देशे अथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ताः तस्मिन् विभवहीनः यः वसेत् सः अधमः पुरुषः।

शब्दार्थ-अधिष्ठाने = स्थान पर नगर में। विणक्पुत्रः = बिनए का पुत्र। विभवक्षयात् = धन की कमी के कारण। गन्तुमिच्छन् (गन्तुम् + इच्छन्) = जाने की इच्छा से। व्यचिन्तयत् (वि + अचिन्तयत्) = सोचने लगा। स्ववीर्यतः = अपने पराक्रम के द्वारा। विभवहीनो = धन-ऐश्वर्य से हीन। पुरुषाधमः = नीच पुरुष । लौहघटिता = लोहे से बनी हुई। पूर्वपुरुषोपार्जिता = पूर्वजों के द्वारा खरीदी गई। तुला आसीत् = तराजू थी। श्रेष्ठिनो = सेठ। निक्षेपभूतां = जमा-राशि/धरोहर के रूप में। सूचिरं कालं = बहुत समय तक। भ्रान्त्वा = घूमकर। शाश्वतम् = सदा रहने वाला। स्नानोपकरणहस्तं = नहाने का सामान हाथ में लिए हुए। प्रेषय = भेज दो। पितृव्योऽयं = चाचा, ताऊ। यास्यित = वह जाएगा। अनेन साकं = उसके साथ। प्रहृष्टमनाः = प्रसन्न मन वाला। अभ्यागतेन = अतिथि। गिरिगुहायां = पर्वत की गुफा में। बृहत् शिलया = विशाल शिला से। आच्छाद्य = ढककर। सत्त्वरं = शीघ्र। गृहमागतः (गृहम् + आगतः) = घर आ गया।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'लौहतुला' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ के पास धरोहर के रूप में रखी गई अपनी लोहे की तुला के न मिलने पर जीर्णधन ने नदी में स्नान कराने के बहाने सेठ के पुत्र को गुफा में छुपा दिया।

सरलार्थ-किसी स्थान पर जीर्णधन नामक बनिए का पुत्र रहता था। धन की कमी के कारण विदेश जाने की इच्छा से उसने सोचा-जिस देश अथवा स्थान पर अपने पराक्रम के द्वारा भोगों का भोग किया, वहाँ धन-ऐश्वर्य से हीन होकर जो निवास करता है, वह मनुष्य सबसे नीच होता है।

भाव यह है कि जिस स्थान पर मनुष्य अपने पराक्रम से एकत्रित सम्पत्ति ऐश्वर्य से आराम करता है, वहीं यदि वह निर्धन हो जाता है तो उसे नीच पुरुष माना जाता है।

उसके घर पर उसके पूर्वजों द्वारा खरीदी गई लोहे से बनी एक तराजू थी। उसे किसी सेठ के घर धरोहर के रूप में रखकर वह दूसरे देश को चला गया। इसके बाद दीर्घकाल तक इच्छानुसार दूसरे देश में घूमकर पुनः अपने नगर को वापस आकर उसने सेठ से कहा-"हे सेठ! धरोहर के रूप में रखी मेरी वह तराजू दे दो।" उसने कहा-"अरे! वह तो नहीं है, तुम्हारी तराजू को चूहे खा गए।"

जीर्णधन ने कहा-"हे सेठ! यदि चूहे खा गए तो इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह संसार ही ऐसा है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। परंतु मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ। इसलिए तुम अपने धनदेव नामक इस पुत्र को स्नान की वस्तुएँ हाथ में देकर मेरे साथ भेज दो।" . वह सेठ अपने पुत्र से बोला-"बेटा! ये तुम्हारे चाचा हैं, स्नान के लिए जा रहे हैं, तुम इनके साथ जाओ।"

इस प्रकार वह बनिए का पुत्र स्नान की वस्तुएँ हाथ में लेकर प्रसन्न मन से उस अतिथि के साथ चला गया। तब वह बनिया-पुत्र वहाँ पहुँचकर और स्नान करके उस शिशु को पर्वत की गुफा में रखकर द्वार को एक बड़े पत्थर से ढक कर शीघ्र घर आ गया।।

भावार्थ-संस्कृत में एक कहावत है-"शठे शाढ्यं समाचरेत्।" अर्थात् धूर्त के साथ धूर्त ही बनना चाहिए। सेठ ने जीर्णधन के · साथ धूर्तता का आचरण किया। उसका जवाब देने के लिए उसने सेठ के पुत्र को पर्वत की गुफा में छुपा दिया।

2. सः श्रेष्ठी पृष्टवान्–"भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः"? इति। स अवदत्-"तव पुत्रः नदीतटात् श्येनेन हृतः" इति। श्रेष्ठी अवदत्-"मिथ्यावादिन! किं क्वचित् श्येनो बालं

हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदियष्यामि।" इति। सोऽकथयत्-"भोः सत्यवादिन् ! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति।

तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।" इति। एवं विवदमानौ तौ द्वाविप राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच"भोः! वञ्चितोऽहम्। वञ्चितोऽहम !

अब्रह्मण्यम् ! अनेन चौरेण मम शिशुः अपहृतः" इति। अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन्-"भोः! समर्म्यतां श्रेष्ठिसुतः"।

शब्दार्थ-पृष्ठवान् = और पूछा। कप्यतां = बताओ। कुत्र = कहाँ। श्येनेन = बाज के द्वारा। हतः = ले जाया गया। मिथ्यावादिन = झूठ बोलने वाले। समर्पय = लौटा दो। अन्यथा = नहीं तो। विवदमानौ = झगड़ा करते हुए। तारस्वरेण = जोर से। अब्रह्मण्यम् = घोर अन्याय, अनुचित । अपहृतः = चुरा लिया गया है।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'लौहतुला' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ तथा जीर्णधन दोनों आपस में झगड़ते हुए राजकुल में जाते हैं।

सरलार्थ-उस व्यापारी (सेठ) द्वारा पूछा गया-"हे अतिथि! बताइए मेरा पुत्र कहाँ है जो तुम्हारे साथ नदी पर गया था?" उसने (जीर्णधन) कहा-"नदी के तट से उसे बाज उठाकर ले गया।" सेठ ने कहा-"हे झूठे! क्या कहीं बाज बालक को ले जा सकता है? तो मेरा पुत्र लौटा दो अन्यथा मैं राजकुल में शिकायत करूँगा।"

उसने कहा-"अरे सच बोलने वाले! जैसे बाज बालक को नहीं ले जाता, वैसे ही चूहे भी लोहें से निर्मित तराजू नहीं खाते। यदि पुत्र को वापस चाहते हो तो मेरी तराजू लौटा दो।"

इस प्रकार झगड़ते हुए वे दोनों राजकुल चले गए। वहाँ सेठ ने जोर से कहा-"अरे! अनुचित हो गया! अनुचित! मेरे पुत्र को इस चोर ने चुरा लिया है।" तब न्यायकर्ताओं ने उससे (जीर्णधन) कहा-"अरे! सेठ का पुत्र लौटा दो।" ।

भावार्थ-जिस प्रकार जीर्णधन को पता था कि तराजू सेठ के पास है, उसी प्रकार सेठ को भी पता था कि उसका पुत्र जीर्णधन के पास ही है। आपस में फैसला न होने के कारण वे न्यायाधीश के पास जाते हैं।

3. सोऽवदत्-"किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटात् श्येनेन शिशुः अपहृतः" । इति। तच्छ्रत्वा ते अवदन्-भोः! भवता सत्यं नाभिहितम्-किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति? सोऽवदत्-भोः भोः! श्रूयतां मद्भचः तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः। राजन्तत्र हरेच्छ्येनो नात्र संशयः॥ ते अपृच्छन्-"कथमेतत्"। ततः स श्रेष्ठी सभ्यानाम्ये आदितः सर्वं वनान्तं स्यवेदयत्। ततः स्यायाधिकारिणः विहस्य

ततः सं श्रेष्ठीं सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयत्। ततः न्यायाधिकारिणः विहस्य, तौ द्वाविप सम्बोध्य तुला-शिशुप्रदानेन तोषितवन्तः।

अन्वय-राजन्। यत्र लौहसहस्रस्य मूषकाः खादन्ति तत्र श्येनः बालकं हरेत, अत्र संशयः न।

शब्दार्थ-पश्यतो मे = मेरे देखते हुए। नदीतटात् = नदी के तट से। नाभिहितम् = कहा गया है। हरेत् = चुरा सकता है। ले जा सकता है। संशयः = सन्देह । सभ्यानामग्रे = सभासदों के सम्मुख। आदितः = आरम्भ से। सर्वं वृत्तान्तं = सारी घटना। विहस्य = हँसकर। सम्बोध्य = समझा-बुझाकर। तोषितवन्तः = सन्तुष्ट किए गए।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'लौहतुला' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ तथा जीर्णधन फैसले के लिए राजकुल में गए, जहाँ पर न्यायाधीश ने फैसला सुनाया।

सरलार्थ-उसने (जीर्णधन) कहा—"क्या करूँ? मेरे देखते-देखते बालक को बाज नदी के तट से ले गया।" यह सुनकर वे सब बोले-अरे! आपने सच नहीं कहा-क्या बाज बालक को उठा ले जाने में समर्थ होता है? उसने (जीर्णधन) कहा-अरे-अरे! मेरी बात सुनिए

हे राजन्! जहाँ लोहे से निर्मित तराजू को चूहे खा सकते हैं, वहाँ बाज बालक को उठा ले जा सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

उन्होंने कहा-"यह कैसे हो सकता है?" इससे उस सेठ ने सभासदों के सामने आरम्भ से सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तब हँसकर उन्होंने उन दोनों को समझा-बुझाकर तराजू और बालक का आदान-प्रदान करके उन दोनों को सन्तुष्ट किया।

भावार्थ-इस गद्यांश में न्याय के महत्त्व को बताया गया है। वादी-प्रतिवादी दोनों को पता होता है कि दोषी कौन है, परन्तु दोष निर्धारण के लिए न्यायाधीश का फैसला सर्वमान्य होता है। सेठ तथा जीर्णधन को न्यायाधीश द्वारा दिए गए फैसले को मानना पड़ा।

#### अभ्यासः

- 1. एकपदेन उत्तरं लिखत (एक पद में उत्तर लिखिए)
- (क) विणक्पुत्रस्य किं नामं आसीत्?
- (ख) तुला कैः भक्षिता आसीत ?
- (ग) तुला की हशी आसीत?
- (घ) पुत्रः केन हृतः इति जीर्णधनः वदति?
- (ङ) विवदमानौ तौ द्वाविप कुत्र गतौ?

उत्तराणि:

- (क) जीर्णधनः,
- (ख) मूषकैः,
- (ग) लौहघटिता,
- (घ) श्येनेन,
- (ङ) राजकुलं ।
- 2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए)

- (क) देशान्तरं गन्तुमिच्छन् वणिक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत्?
- (ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत् ?
- (ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?
- (घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् अवदत् ?
- (ङ) धर्माधिकारिणिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं तोषितवन्तः? उत्तराणि:
- (क) देशान्तरं गन्तुम् इच्छन् वणिक्पुत्रः व्यचिन्तयत्-यत्र स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ताः तस्मिन् स्थाने यः विभवहीनः वसेत् सः पुरुषाधमः।
- (ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी अकथयत्-भोः! त्वदीया तुला मूषकैः भिक्षता।
- (ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं बृहच्छिलया आच्छाद्य गृहमागतः।
- (घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः विणक्पुत्रः श्रेष्ठिनं अवदत्-"नदी तटात् सः बालः श्येनेन हृतः" इति।
- (ङ) धर्माधिकारिणिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन तोषितवन्तः।
- 3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत (स्थूल पदों के आधार पर प्रश्न निर्माण कीजिए)
- (क) जीर्णधनः विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।
- (ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय अभ्यागतेन सह प्रस्थितः ।
- (ग) वणिक् गिरिगुहां बृहच्छिलया आच्छादितवान्।
- (घ) सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितौ। उत्तराणि:
- (क) कः विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्?
- (ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय केन सह प्रस्थितः?
- (ग) वणिक् गिरिगुहां कस्मात् आच्छादितवान्?
- (घ) सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य केन सन्तोषितौ?

पुरुषाधमः।

4. अधोलिखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः पाठमाधृत्य तं पूरयत (निम्नलिखित श्लोकों का अपूर्ण अन्वय दिया गया है। पाठ के आधार पर उसे पूर्ण कीजिए) (क) यत्र देशे अथवा स्थाने ........ भोगाः भुक्ता ....... विभवहीनः यः ....... स पुरुषाधमः। (ख) राजन् ! यत्र लौहसहस्रस्य ....... मूषकाः ....... तत्र श्येनः ....... हरेत् अत्र संशयः न। उत्तराणि (क) यत्र देशे अथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ता तस्मिन् विभवहीनः यः वसेत् स

(ख) राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य तुलाम् मूषकाः खादन्ति तत्र श्येनः बालकम् हरेत् अत्र संशयः न।

- 5. तत्पदं रेखाङ्कित कुरुत यत्र (उस शब्द को रेखांकित कीजिए, यहाँ) (क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय। (ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्। (ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः, सभ्यानाम् । उत्तराणिः
- (क) लौहसहस्रस्य, (ख) सत्त्वरम्,
- (ग) स्ववीर्यतः
- 6. सिन्धिना सिन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत (सिन्धि अथवा सिन्धिविच्छेद के द्वारा रिक्त स्थान पूरे कीजिए)
- (क) श्रेष्ठ्याह = ...... + आह
- (ख) ..... = द्वौ + अपि
- (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + .....
- (घ) ..... = यथा + इच्छया
- (ङ) स्नानोपकरणम् = ..... + उपकरणम्
- (च) ..... = स्नान + अर्थम्

उत्तराणि:

- (क) श्रेष्ठ्याह = श्रेष्ठी + आह
- (ख) द्वाविप = द्वौ + अपि
- (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + उपार्जिता
- (घ) यथेच्छया = यथा + इच्छया
- (ङ) स्नानोपकरणम् = स्नान + उपकरणम्
- (च) स्नानार्थम् = स्नान + अर्थम्

#### **SANSKRIT**

7. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत (समस्तपद अथवा विग्रह लिखिए) विग्रहः – समस्तपदम (क) स्नानस्य उपकरणम् = ..... (ख) ..... = गिरिगुहायाम् (ग) धर्मस्य अधिकारी = ..... (घ) ..... = विभवहीनाः उत्तराणि: विग्रहः – समस्तपदम (क) स्नानस्य उपकरणम् – स्नानोपकरणम् (ख) गिरेः गुहायाम् – गिरिगुहायाम् (ग) धर्मस्य अधिकारी – धर्माधिकारी

(घ) विभवेन हीनाः – विभवहीनाः

(अ) यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायता "लौहतुला" इति कथायाः सारांश संस्कृतभाषया लिखत

(निम्नलिखित शब्दों की सहायता से 'लौहतुला' कथा का सारांश संस्कृत भाषा में लिखिए)

| वणिक्पुत्रः | स्नानार्थम् | लौहतुला    | अयाचत् | वृत्तान्तं |
|-------------|-------------|------------|--------|------------|
| ज्ञात्वा    | श्रेष्ठिनं  | प्रत्यागतः | गतः    | प्रदानम्   |

उत्तराणि-संस्कृत भाषा-एकदा जीर्णधन नाम वणिक् पुत्रः विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुम् अचिन्तयत्। तस्य गृहे एका लौहतुला आसीत् । तां कस्यचित् श्रेष्ठिनः गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा सः देशान्तरं प्रस्थितः। सुचिरं कालं देशान्तरं भ्रान्त्वा स्वनगरम् प्रत्यागत्य सः तुलाम् अयाचत्। सः श्रेष्ठी प्रत्युवाच-"तुलां तु मूषकैः भक्षिता।" ।

ततः जीर्णधनः श्रेष्ठिनः पुत्रेण सह स्नानार्थं गतः। स्नात्वा सः श्रेष्ठिपुत्रं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य गृहम् आगतः। ततः सः वणिक् श्रेष्ठिनं स्वपुत्रविषये अपृच्छत्। वणिक् उवाच-'नदी तटात सः श्येनेन हृतः।" इति। सः शीघ्रमाह-'श्येनः बालं हर्तुं न शक्नोति। अतः

समर्पय मे सुतम्।' एवं विवदमानौ तौ राजकुलं गतौ । सर्वं वृत्तान्तं ज्ञात्वा धर्माधिकारिभिः तुला-शिशु-प्रदानेन तौ द्वौ सन्तोषितौ।

| <b></b>   |
|---|
| "अहम्तपोदत्तः।"                                   |
| उपर्युक्तवाक्यस्य रिक्तस्थाने पूरणीयक्रियापदमस्ति |
| (अ) अस्मि   |
| (ब) अस्ति   |
| (स) असि   |
| (द) स्म   |
| उत्तर:  |
| (अ) अस्मि   |
| <b></b>   |
| "हन्त! नास्त्यभावो जगतिः।"                        |
| रिक्तस्थाने पूरणीयपदं वर्तते                      |
| (अ) मूर्खाः                                       |
| (ब) मूर्खेभ्यः                                    |
| (स) मूर्खाणाम्                                    |
| (द) मूर्खेषु                                      |
| उत्तर :   |
| (स) मूर्खाणाम्                                    |
| प्रश्न 3.   |
| "अलमलं तव श्रमेण।"                                |
| रेखाङ्कितपदे 'अलम्' योगे का विभक्तिः प्रयुक्ता?   |
| (अ) द्वितीया                                      |
| (ब) तृतीया  |
| (स) चतुर्थी                                       |
| (द) पंचमी   |
| उत्तर:  |
| (ब) तृतीया  |

#### प्रश्न 4.

'सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि'

रेखाङ्कितपदे लकारः, पुरुषः, वचनञ्च वर्तते

- (अ) लट्लकारः उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
- (ब) लङ्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्
- (स) लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्
- (द) लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

उत्तर:

(द) लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

#### प्रश्न 5.

"सिकताः जलप्रवाहे......किम्?"

रिक्तस्थाने 'स्था' धातोः लुट्लकारस्य रूपं वर्तते

- (अ) स्थास्यन्ति
- (ब) तिष्ठिष्यन्ति
- (स) स्थास्यामि
- (द) स्थास्यसि

उत्तर :

- (अ) स्थास्यन्ति
- (अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत -

## समस्तपदानि - विग्रहः

यथा - नयनयुगलम् - नयनयोः युगलम्

- (क) जलप्रवाहे .....
- (ख) तपश्चर्यया .....
- (ग) जलोच्छलनध्वनिः .....
- (घ) सेतुनिर्माणप्रयासः .....

## उत्तरम् :

समस्तपदानि - विग्रहः

- (क) जलप्रवाहे जलस्य प्रवाहे
- (ख) तपश्चर्यया तपसः चर्यया
- (ग) जलोच्छलनध्वनिः जलस्य उच्छलनस्य ध्वनिः
- (घ) सेतुनिर्माणप्रयासः सेतोः निर्माणस्य प्रयासः।

| <b>되ጻ 7</b> .   |
|---|
| उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनं वाक्यद्वयं रचयत                    |
| (क) यथा- अलं चिन्तया। ('अलम्' योगे तृतीया)                                  |
| (i) (भय) (कोलाहल)   |
| उत्तरम् :   |
| (i) अलं भयेन।   |
| (ii) अलं कोलाहलेन।  |
|   |
|   |
| (ख) यथा - माम् अनु स गच्छति। ('अनु' योगे द्वितीया)                          |
| (i) (गृह)   |
| (ii) (पर्वत)  |
| उत्तरम् :   |
| (i) गृहम् अनु सः भ्रमति।  |
| (ii) पर्वतम् अनु सः गच्छति।   |
| (11) 14(1)(15)(11)  |
| (ग) यथा- अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलषसि। ('विना' योगे द्वितीया) |
| (i) (परिश्रम)   |
| (ii) (अभ्यास)   |
| उत्तरम् :   |
| (i) परिश्रमं विनैव धनं प्राप्तुमभिलषसि।                                     |
| (ii) अभ्यासं विनैव विद्यां प्राप्तुमभिलषसि।                                 |
|   |
| (घ) यथा-सन्ध्यां यावत् गृहमुपैति। ('यावत्' योगे द्वितीया)                   |
| (i) (मास)   |
| (ii) (वर्ष)   |
| उत्तरम् :   |
| (i) मासं यावत् नगरम् उपैति।   |
| (ii) वर्षं यावत् विद्यालयम् उपैति।  |

## सिकतासेतुः Summary and Translation in Hindi

पाठ-परिचय - प्रस्तुत नाट्यांश सोमदेवरचित कथासरित्सागर के सप्तम लम्बक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिए वेश बदलकर इन्द्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतु-निर्माण के कार्य में लग जाते हैं।

उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है-'अरे! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो?' इन्द्र उन्हें उत्तर देते हैं-यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी सम्भव है। इन्द्र के अभिप्राय को जानकर तपोदत्त तपस्या करना छोड़कर गुरुजनों के मार्गदर्शन में विद्या का ठीक-ठीक अभ्यास करने के लिए गुरुकुल चला जाता है।

पाठ का सप्रसंग हिन्दी-अनुवाद एवं संस्कृत-व्याख्या -

मन्यते। एष इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

1. (ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः) तपोदत्तः - अहमस्मि तपोदत्तः । बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाऽधीतवानस्मि। तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्। (ऊर्ध्वं निःश्वस्य) हा विधे! किमिदम्मया कृतम्? कीदृशी दुर्बुद्धिरासीत्तदा! एतदपि न चिन्तितं यत् - परिधानैरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते। नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे॥1॥ (किञ्चिद् विमृश्य) भवतु, किमेतेन? दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो